❍ 27 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *पवित्रता और योग की सब्जेक्ट में फर्स्ट नंबर लिया ?*

➢➢ *पतितों को पावन बनाने की सेवा की ?*

➢➢ *ब्राह्मण जीवन में कम खर्च बालानशीन बनकर रहे ?*

➢➢ *बाप और सेवा से सच्चा प्यार रहा ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आवाज से परे अपनी श्रेष्ठ स्थिति में स्थित हो जाओ तो सर्व व्यक्त आकर्षण से परे शक्तिशाली न्यारी और प्यारी स्थिति बन जायेगी। *एक सेकण्ड भी इस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित होंगे तो इसका प्रभाव सारा दिन कर्म करते हुए भी स्वयं में विशेष शान्ति की शक्ति अनुभव करेंगे। इसी स्थिति को कर्मातीत स्थिति, बाप समान सम्पूर्ण स्थिति कहा जाता है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✺ *"मैं स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा अपने को स्वदर्शन चक्रधारी आत्मायें अनुभव करते हो? *स्वदर्शन चक्रधारी अर्थात् जहाँ स्वदर्शन चक्र है वहाँ अनेक माया के चक्कर समाप्त हो जाते हैं। तो माया के अनेक चक्करों से बचने वाले अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी। जहाँ माया के चक्कर हैं वहाँ स्वदर्शन चक्र नहीं। क्योंकि स्वदर्शन चक्र शक्तिशाली है, इस शक्तिशाली चक्र के आगे माया स्वत: ही भाग जाती है।* तो ऐसे बने हो?

〰✧ स्वप्न में भी माया का चक्कर वार न करे। पहले भी सुनाया है कि जो बाप के गले का हार हैं, वह कभी माया से हार खा नहीं सकते। अगर माया से हार खाते हैं तो बाप के गले का हार नहीं बन सकते। तो गले का हार हो या हार खाने वाले हो? *बाप ने सभी बच्चों को महावीर विजयी बनाया, एक भी कमजोर नहीं। तो महावीर की निशानी है यह - 'स्वदर्शन चक्र'। सदा स्वदर्शन चक्र चलता रहे तो स्वत: सहज विजयी रहेंगे। यह बाप की विशेषता है जो सभी को चक्रधारी बनाते हैं, सभी को श्रेष्ठ भाग्यवान बनाते हैं।* बाप किसी को भी कम नहीं बनाते। बाप एक जैसा सभी को मालामाल बनाते हैं।

〰✧ *बाप एक ही समय सभी को सब खजाने देता है, अलग नहीं देता। लेकिन नम्बर क्यों बनते हैं? लेने वाले नम्बरवार बन जाते हैं। देने वाला नम्बरवार नहीं बनाता। सब बाप के स्नेही सहयोगी तो हो ही। लेकिन

शक्तिशाली बनने में अन्तर पड़ जाता है। बापदादा तो सबको महावीर रूप में देखता है।* अच्छा! सदा बाप की दिल में रहने वाले और सदा बाप को दिल पर बिठाने वाले। सदा बाप की दिल में रहने वाले ही निरन्तर योगी हैं।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ जब ऊँची पहाडी पर चढ़ते हैं तो क्या लिखा हुआ होता है? *ब्रेक चेक करो। क्योंकि ब्रेक सेफ्टी का साधन है।* तो कन्ट्रोलिंग पॉवर का वा ब्रेक लगाने का अर्थ यह नहीं कि लगाओ यहाँ और ब्रेक लगे वहाँ कोई व्यर्थ को कन्ट्रोल करना चाहते है, समझते हैं - यह रांग है।

〰✧ तो *उसी समय रांग को राइट में परिवर्तन होना चाहिए।* इसको कहा जाता है कन्ट्रोलिंग पॉवर ऐसे नहीं कि सोच भी रहे हैं लेकिन आधा घण्टा व्यर्थ चला जाये, पीछे कन्ट्रोल में आये। *बहुत पुरुषार्थ करके आधे घण्टे के बाद परिवर्तन हुआ तो उसको कन्ट्रालिंग पॉवर नहीं, रूलिंग पॉवर नहीं कहा जाता।*

〰✧ यह हुआ थोडा-थोडा अधीन और थोडा-थोडा अधिकारी - मिक्स। तो उसको राज्य अधिकारी कहेंगे या पुरुषार्थी कहेंगे? तो *अब पुरुषार्थी नहीं, राज्य अधिकारी बनो।* यह राज्य अधिकारी का श्रेष्ठ मजा है।

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

〰✧ बापदादा तो कहते हैं सबसे सहज पुरुषार्थ है दुआयें दो और दुआयें लो। *दुआओं से जब खाता भर जायेगा तो भरपूर खाते में माया भी डिस्टर्ब नहीं करेगी। जमा का बल मिलता है। राज़ी रहो और सर्व को राज़ी करो। हर एक के स्वभाव का राज़ जानकर राज़ी करो। ऐसे नहीं कहो यह तो है ही नाराज़। आप स्वयं राज़ को जान जाओ, उसकी नब्ज को जान जाओ फिर दुआ की दवा दो तो सहज हो जायेगा। तो सहज पुरुषार्थ करो, दुआयें देते जाओ। लेने का संकल्प नहीं करो देते जाओ तो मिलता जायेगा। देना ही लेना है।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- इस पतित दुनिया से बुद्धियोग निकाल, बेहद का सन्यासी बनना"*

➳ _ ➳ सुबह की गुलाबी सी धूप में सूर्य की सुनहरी किरणों को... गुलाब के फूलो पर गिरते हुए देख रही हूँ... कि *ये किरणे किस तरहा गुलाब के सौंदर्य में चार चाँद लगा रही है... उनका रूप लावण्य किस कदर चमक उठा है.*.. और फिर मै आत्मा अपने ज्ञान सूर्य बाबा की यादो में खो जाती हूँ... मुझ आत्मा के देह की संगति में कंटीले स्वरूप.... *कैसे मेरे बाबा ने अपनी शक्तियो और गुणो की किरणों में... रूहानियत से भर कर खिला हुआ, खुशबूदार फूल बना दिया है... कि आज मेरी सुगन्ध का विश्व मुरीद हो गया है..*. मुझे जो सौंदर्य मिला है वह स्वयं भगवान ने दिया है... जो पूरे विश्व में कहीं और मिल ही नही सकता है... सारा विश्व इस खूबसूरती को चाह रहा है... और *यह मेरी जागीर बन गया है क्योकि सिर्फ मेरे पास ही तो भगवान है.*..

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को देहभान से न्यारा बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... मीठे बाबा के साथ की ऊँगली पकड़कर... इस देह भान से उबर कर... स्वयं को आत्मिक स्वरूप में स्थित करो... इस पतित और विकारो से ग्रसित दुनिया में लिप्त रहकर... बुद्धि को और ज्यादा मलिन न करो... *ईश्वर पिता की यादो भरे हाथ को पकड़कर, बेहद के सन्यासी बनकर मुस्कराओ.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से देवताई श्रंगार पाकर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा आपकी छत्रछाया में दुखो की दुनिया से निकलकर... सुखो भरी छाँव में आ गयी हूँ... *हद के दायरों से निकलकर, बेहद की सन्यासी बन, असीम खुशियो से भर गयी हूँ.*.. मेरा जीवन खुशनुमा बहारो से भर गया है..."

❉ *प्यारे बाबा ने मझ आत्मा को कांटे से खशबदार फल बनाते हए कहा :-*

"मीठे प्यारे लाडले बच्चे... संगम के वरदानी समय में ईश्वरीय यादो की बहारो से सजे... खुशनुमा मौसम में अपने महान भाग्य के मीठे गीत गाओ... *पतित दुनिया की हदो से निकलकर... बेहद के गगन में, खुशियो भरा उन्मुक्त पंछी बन उड़ जाओ..*. बेहद के सन्यासी बन तपस्या में खो जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की बाँहों में अपना सतयुगी भाग्य सजाकर कहती हूँ :-* "ओ मेरे प्यारे बाबा... *आपने मेरा जीवन खुशियो का चमन बना दिया है... ज्ञान और याद की रौनक से झिलमिला कर, आत्मिक भाव में जगमगा दिया है.*.. मै आत्मा देह की सारी सीमाओ से निकल कर... बेहद के आसमाँ में खुशियो की परी बनकर उड़ रही हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सतयुगी दुनिया का मालिक बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... सदा ईश्वरीय यादो में खोये रहो... भगवान को पाकर भी, अब देह की मिटटी में मनबुद्धि के हाथो को पुनः मटमैला न करो...इस पतित दुनिया में स्वयं को और न फंसाओ... *बेहद के वैराग्य को अपनाकर, यादो में मन बुद्धि को निर्मलता से सजाकर... असीम सुखो के अधिकारी बन मुस्कराओ.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की श्रीमत को दिल में समाकर जीवन को खुबसूरत बनाकर कहती हूँ :-* "प्यारे प्यारे बाबा मेरे... आपने मेरा जीवन बेहद के सन्यास से भरकर, कितना हल्का और प्यारा कर दिया है... मन और बुद्धि व्यर्थ से निकलकर... अब कितनी प्यारी और सुखदायी हो गयी है... *मेरे सारे बोझ काफूर हो गए है, और मै आत्मा बेफ़िक्र बादशाह बनकर मुस्करा रही हूँ.*.."मीठे बाबा को अपना प्यारा मन और बुद्धि की झलक दिखाकर, मै आत्मा... कर्मक्षेत्र पर लौट आयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- इस पुरानी दुनिया का कम्प्लीट सन्यास करना है*"

➳ _ ➳ अपने आश्रम के क्लास रूम में अपने गॉडली स्टूडेंट स्वरूप में स्थित हो कर, अपने परम शिक्षक शिव बाबा के मधुर महावाक्य मैं सुन रही हूँ। *बाबा ने अपने सभी ब्राह्मण बच्चों को "तुम हो बेहद के सन्यासी" टाइटल देते हुए मुरली के माध्यम से अपने मधुर महावाक्य उच्चारण किये*। उन मधुर महावाक्यों की समाप्ति के बाद, अपने आश्रम के बाबा रूम मैं बैठ मैं बाबा के उन महावाक्यों को स्मृति में ला कर जैसे ही उन पर विचार सागर मंथन करने लगती हूँ *ऐसा अनुभव होता है जैसे मेरे सामने लगे ट्रांसलाइट के चित्र के स्थान पर साक्षात अव्यक्त बापदादा खड़े हैं और मुझे देख कर मन्द - मन्द मुस्करा रहें हैं*।

➳ _ ➳ ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे बाबा के होंठ धीरे धीरे खुल रहें हैं और बाबा मुझ से कुछ कह रहे हैं। मैं एकटक बाबा को निहार रही हूँ। *बाबा के नयनों से एक बहुत तेज लाइट की धार निकलती है और मेरी भृकुटि से होती हुई सीधे मुझ आत्मा को टच करती है*। देखते ही देखते बाबा की वो लाइट माइट पा कर मैं अपने अव्यक्त स्वरूप में स्थित होने लगती हूँ। स्वयं को अब मैं एकदम हल्का अनुभव कर रही हूँ। *मुझे ऐसा लग रहा हूं जैसे मेरे पाँव धरती को नही छू रहे बल्कि धीरे - धीरे धरती से ऊपर उठ रहे हैं*। एक बहुत ही निराला अनुभव मैं आत्मा इस समय कर रही हूँ। मेरा यह लाइट स्वरूप मुझे असीम आनन्द की अनुभूति करवा रहा है।

➳ _ ➳ इस अति सुंदर अव्यक्त स्थिति में स्थित, मेरी निगाहें जैसे ही दोबारा बाबा की ओर जाती है। बाबा के अधखुले होंठो से निकल रही अव्यक्त आवाज को अब मैं बिल्कुल स्पष्ट सुन रही हूँ। बाबा के हर संकल्प को अब मेरी बुद्धि बिल्कुल क्लीयर कैच कर रही है। *मैं स्पष्ट समझ रही हूँ कि बाबा मुझ से कह रहें हैं, मेरे बच्चे:- इस पुरानी दुनिया का तुम्हे कम्प्लीट सन्यास करना है"*। हद के सन्यासी तो घर - बार छोड़ जंगलो में चले जाते हैं। लेकिन तुम्हे बेहद का सन्यासी बन, घर - गृहस्थ में रहते मन बुद्धि से इस पुरानी दुनिया का कम्प्लीट सन्यास करना है। *तुम्हे प्रवृत्ति में रहते पर - वृति में रह अपना जीवन कमल पुष्प समान बना कर, सबको अपनी रूहानियत की खशब से

महकाना है*।

➳ _ ➳ इस अव्यक्त मिलन का भरपूर आनन्द लेते - लेते मैं अनुभव करती हूँ जैसे अव्यक्त बापदादा अब अपने अव्यक्त वतन की ओर जा रहें हैं और मुझे भी अपने साथ चलने का ईशारा दे रहें हैं। बापदादा का हाथ थामे, मैं अव्यक्त फ़रिशता अब धीरे - धीरे ऊपर उड़ रहा हूँ। *छत को क्रॉस कर, ऊपर की और उड़ता हुआ, आकाश में विचरण करता हुआ, आकाश को भी पार कर अब मै फ़रिशता बापदादा के साथ पहुंच जाता हूँ सूक्ष्म वतन*। अपने पास बिठा कर, अपनी स्नेह भरी दृष्टि से बाबा मुझे निहार रहें हैं। बाबा की दृष्टि से बाबा के सभी गुण मुझ में समाते जा रहें हैं।

➳ _ ➳ बाबा की शक्तिशाली दृष्टि मुझमें एक अलौकिक रूहानी नशे का संचार कर रही हैं जिससे मैं फरिश्ता असीम रूहानी आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ। बाबा के हाथों का मीठा - मीठा स्पर्श मुझे बाबा के अपने प्रति अगाध प्रेम का स्पष्ट अनुभव करवा रहा है । मैं बाबा के नयनो में अपने लिए असीम स्नेह देख कर गद - गद हो रहा हूँ। *बाबा की दृष्टि से आ रही सर्वशक्तियों की लाइट माइट मुझमे असीम बल का संचार कर रही है*। स्वयं को परमात्म बल से भरपूर करके अब मैं बापदादा को निहारते हुए "बेहद के सन्यासी" बनने के उनके फरमान का पालन करने की उनसे दृढ़ प्रतिज्ञा कर वापिस साकारी दुनिया की ओर प्रस्थान करता हूँ। *अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर के साथ मैं फिर से अपने साकारी तन में प्रवेश कर जाता हूँ*।

➳ _ ➳ अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर बाबा के फरमान को धारणा में लाने का अब मैं पूरा पुरुषार्थ कर रही हूँ। देह और देह की दुनिया में रहते हुए भी मन बुद्धि से इस दुनिया का कम्प्लीट सन्यास कर मैं स्वयं को इस नश्वर दुनिया से न्यारा अनुभव कर रही हूं। *सर्व सम्बन्धों का सुख बाबा से लेते हुए मैं देह और देह से जुड़े सम्बन्धों से सहज ही उपराम होती जा रही हूँ*। मन बुद्धि से पुरानी दुनिया का सन्यास, मुझे प्रवृति में रहते भी हर प्रकार के बोझ से मुक्त, लाइट स्थिति का अनुभव हर समय करवा रहा है

———————————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं ब्राह्मण जीवन मे कम खर्च बालनशीन करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं अलौकिकता सम्पन्न आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा बाप और सेवा से सच्चा प्यार करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा परिवार का प्यार स्वत: मिलते अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं सर्व की प्यारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *बापदादा कहते हैं आप लोगों ने ही प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफाई करो, उसको लम्बा-लम्बा झाड़ू दिया है, सफा करो। तो घबराते क्यों हो? * आपके आर्डर से वह सफाई करायेगी तो आप क्यों हलचल में आते हो?

आपने ही तो आर्डर दिया है। *तो अचल-अडोल बन मन और बुद्धि को बिल्कुल शक्तिशाली बनाए अचल-अडोल स्थिति में स्थित हो जाओ। प्रकृति का खेल देखते चलो। घबराना नहीं।* आप अलौकिक हो, साधारण नहीं हो। साधारण लोग हलचल में आयेंगे, घबरायेंगे। अलौकिक, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें खेल देखते अपने विश्व-कल्याण के कार्य में बिजी रहेंगे। अगर मन और बुद्धि को फ्री रखा तो घबरायेंगे। *मन और बुद्धि से लाइट हाउस हो, लाइट फैलायेंगे, इस कार्य में बिजी रहेंगे तो बिजी आत्मा को भय नहीं होगा, साक्षीपन होगा; और कोई भी हलचल हो अपने बुद्धि को सदा ही क्लीयर रखना, क्यों क्या में बुद्धि को बिजी वा भरा हुआ नहीं रखना, खाली रखना*।

➳ _ ➳ *एक बाप और मैं.. तब समय अनुसार चाहे पत्र, टेलीफोन, टी.वी. वा आपके जो भी साधन निकले हैं, वह नहीं भी पहुंचे तो बापदादा का डायरेक्शन क्लीयर कैच होगा।* यह साइंस के साधन कभी भी आधार नहीं बनाना। यूज करो लेकिन साधनों के आधार पर अपनी जीवन को नहीं बनाओ। कभी-कभी साइंस के साधन होते हुए भी यूज नहीं कर सकेंगे। *इसलिए साइलेन्स का साधन - जहाँ भी होंगे, जैसी भी परिस्थिति होगी बहुत स्पष्ट और बहुत जल्दी काम में आयेगा। लेकिन अपने बुद्धि की लाइन क्लीयर रखना। समझा*।

➳ _ ➳ चारों ओर हलचल है, प्रकृति के सभी तत्व खूब हलचल मचा रहे हैं, एक तरफ भी हलचल से मुक्त नहीं हैं, व्यक्तियों की भी हलचल है, प्रकृति की भी हलचल है, ऐसे समय पर जब इस सृष्टि पर चारों ओर हलचल है तो आप क्या करेंगे? सेफ्टी का साधन कौन -सा है? *सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानी बना लो तो हलचल में अचल रह सकते हो। इसमें टाइम तो नहीं लगेगा? क्या होगा? अभी ट्रायल करो - एक सेकण्ड में मनबुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ स्थित कर सकते हो? (ड्रिल) इसको कहा जाता है -'साधना'*। अच्छा।

✺ *ड्रिल :- "दुनियावी वा प्राकृतिक हलचल को देखते हुए विदेही बन अचल-अडोल रहने का अनुभव"*

➳ _ ➳ बाबा के इन महावाक्यों को पढ़ मैं आत्मा बाबा के कहे अनुसार अभ्यास शुरू करती हूं... विदेही होने का क्योंकि ऐसी परिस्थितियों में बहुकाल का अभ्यास चाहिए... *आँखों के आगे उस दृश्य को लाती हूं... प्रकृति के सारे तत्व अपना पेपर ले रहे हैं... इस सृष्टि पर सब कुछ हलचल में है क्या धरती, क्या आसमान, कहीं आग, कहीं बाढ़, कहीं तूफ़ान, हर ओर तबाही का ही मंज़र है, सब तरफ त्राहि त्राहि मची हुई है... ऐसे में दुनियावी आत्मायें चीख़ चिल्ला रही हैं...*

➳ _ ➳ *याद आते हैं बाबा के महावाक्य जब चारों ओर हलचल होगी साइंस के साधन भी काम नहीं आएंगे तब तुम्हें ही मन बुद्धि से अचल अडोल बन कार्य करना होगा साइलेन्स की शक्ति काम करेगी...* ऐसे में मैं आत्मा अपने को इस हलचल से उपराम कर अशरीरी बन अपने मन बुद्धि को बाबा में लगाती हूं...

➳ _ ➳ मन बुद्धि से पहुँचती हूं *परमधाम* में और बीज रूप में स्थित होकर अपने *ज्योति स्वरूप शिव बाबा* की किरणों के साये तले बैठ जाती हूँ... *ज्योतिरबिन्दु से आती किरणों से मैं आत्मा प्रकाशित हो रही हूं... ये सुख स्वरूप किरणें, ये आनंद स्वरूप किरणें, ये प्रेम स्वरूप किरणें जैसे जैसे मुझ पर पड़ रहीं हैं...* वैसे वैसे मैं शीतलता की लहरों में लहराने लगती हूँ... कितना अलौकिक है ये... इस अलौकिकता में मैं स्वयं को भी अलौकिक महसूस कर रही हूं... मन और बुद्धि से स्वयं को एकदम हल्का अनुभव कर रही हूं... *परमपिता परमात्मा की छत्रछाया में मैं स्वयं को बेहद शक्तिशाली अनुभव करती हूं...*

➳ _ ➳ परमात्म प्रेम में डूबी मैं आत्मा वापिस इस धरा पर आती हूं... साइलेन्स की इस अवस्था में मुझे एक विशेष अनुभूति हो रही है... *बाबादादा की क्लियर डायरेक्शनस मुझ तक पहुंच रही हैं बच्चे तुम साधारण नहीं हो तुम अलौकिक हो मास्टर सर्वशक्तिमान हो अचल अडोल बन विश्व कल्याण के कार्य में हाथ बँटाओ...*

➳ ➳ अब मैं आत्मा साक्षी दृष्टा बन प्रकृति द्वारा जो उथल पथल हो

रही है वो देखती हूं... पर अब वो विनाश नहीं प्रकृति द्वारा की जा रही सफ़ाई दिख रही है... बिना हलचल में आये मैं अचल अडोल होकर इस सारी प्रक्रिया को देख रही हूं... *मन बुद्धि को सेवा में बिजी कर दु:ख में डूबी दुःखी आत्माओं को शांति का दान दे रही हूं... उनको शुभ भावना दे रही हूं... विश्व कल्याण के कार्य में सहयोग दे रही हूं... शान्ति की, शुभ भावना की, शुभ कामना की तरंगें सब तरफ फैल रही हैं...*

➳ _ ➳ शनैः शनैः प्रकृति के पांचों तत्त्व शांत हो रहे हैं... हलचल धीरे धीरे समाप्त हो रही है... संसार की सभी आत्मायें आसानी से अपने देह से निकल शान्ति धाम को प्रस्थान कर रही हैं... *बापदादा से निरंतर मेरे मन बुद्धि को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिल रही है... और मैं आत्मा चल पड़ी हूं साधना के इस नवीनतम पथ पर अनवरत बिना रुके बिना थके... ओम शांति बाबा*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔